TIME MANAGEMENT AND BIOLOGICAL WATCH

समय प्रबन्धन एवम् जैविक घड़ी

भगवान चार मृत्यु वारंट..... पृष्ठ 264

क्या आपको जानकारी है कि अगर आप 70 साल... पृष्ठ 291

समय की कीमत 10 मिलियन पौंड..... पृष्ठ 273

समय कैसे बिगड़ता है?..... पृष्ठ 294

जब मुर्गा बाँग दे तभी..... पृष्ठ 285

रात ने ईसा मसीह के सामने सूरज की शिकायत.... पृष्ठ 299

Time Management and Biological Watch (Balance-Sheet of Man's Life)

समय प्रबन्धन एवम् जैविक घड़ी (जिन्दगी के हिसाब का लेखा-जोखा)

Take time to **WORK**
— It is the Price of Success.
Take time to **THINK**
— It is Source of Power.
Take time to **PRAY**
— It is the Key to Revelation.
Take time to **PLAY**
— It is the secret of Youth.
Take time to **READ**
— It is the Source of Wisdom.
Take time to be **GOOD**
— It is the road to Happiness.
Take time to **DREAM**
— It is the way to the Moon.
Take time to **LOVE**
— It is the Privilege of God.
Take time to **SERVE**
— It is the mission of Life.
Take time to **LAUGH**
— It is the Music of the Soul.
Take time to **'ऊँची उड़ान'**
— It is the way of Success.
Take time to **CHILD**
— It is the development of Life Skill.

मनुष्य शरीर का मूल्य दस करोड़

एक हट्टा-कट्टा गरीब नवयुवक एक मन्दिर के बाहर भीख माँगा करता था। एक प्रसिद्ध डाक्टर रोज भगवान् के दर्शन करने मन्दिर आते रहते थे और उस गरीब नवयुवक को हमेशा देखा करते थे जो भीख माँग कर अपना समय बरबाद कर रहा था।

एक दिन वह भिखारी नवयवुक डाक्टर के सामने आया और भीख के लिए याचना व प्रार्थना करने लगा।

डाक्टर ने उस भिखारी को कहा कि 'भाई! भीख तो मैं नहीं दूँगा परन्तु कुछ खरीद सकता हूँ।'

'मेरे पास तो कुछ नहीं है सिवाय इस भीख के कटोरे व फटे कपड़ों के। फिर मेरे पास क्या है जिसे मैं आपको बेच सकूँ?'

'नवयुवक गरीब भिखारी, मेरे दोस्त!! तुम्हारे पास बहुत-कुछ है जिसे तुम बेच सकते हो।'

'जी-जी।'

'तुम अपने किसी भी हाथ की अंगुली मुझे काट लेने दो, क्योंकि भीख तो तुम बिना किसी अंगुली के भी माँग सकते हो और तुम्हारा समय तो ऐसे ही बीतता चला जावेगा। हाँ, उस एक अंगुली के तुम्हें पाँच हजार रुपये दूँगा। जिसे मैं दूसरे मरीज के लगाकर—जिसके अंगुली नहीं है—उसकी अंगुली ठीक कर दूँगा।'

नवयुवक भिखारी घबराकर डाक्टर साहब की तरफ एकटक देखने लगा।

'पाँच हजार रुपये कम हैं शायद। अच्छा, ऐसा करो कि तुम्हारा पूरा दाहिना हाथ काट लेने दो। भीख तो तुम वैसे ही माँग सकते हो और समय भी तुम्हारा फालतू निकलता चला जावेगा। हाँ, मैं तुम्हारे दाहिने हाथ की कीमत एक लाख रुपये दूँगा। यह हाथ मैं किसी और व्यक्ति को प्रत्यारोपण करूँगा।'

युवक भिखारी एकदम खामोश और डॉक्टर साहब की तरफ ऊपर-नीचे देखने लग गया।

'तुमको यह भी शायद कम लगता है। चलो! तुम्हारे दोनों पैर काट लेने दो। भीख तो तुम वैसे भी पड़े-पड़े माँग ही लोगे, और समय गँवाने में भी कोई अड़चन नहीं आयेगी। ये दोनों पैर किसी असहाय मरीज के मैं प्रत्यारोपण करके उसको जिन्दगी में चलने लायक बना दूँगा।

'हाँ, इस बार इनकी कीमत मैं तुम्हें 10 लाख दूँगा।'

मगर भिखारी बिना कोई जवाब दिए मायूसी से वापिस जाने लगा।

'सुनो, नवयुवक भिखारी! एक मिनट रुको।'

भिखारी रुक गया।

'तुमको शायद यह भी बहुत कम लगता है—ऐसा प्रतीत होता है। मैं ऐसा करता हूँ कि तुम्हारे पूरे शरीर की कीमत 10 करोड़ दूँगा जिसका प्रत्येक अंग मैं मानव सेवा के कार्यार्थ लगा दूँगा जिसके कारण कामयाबी मेरे कदमों को चूमेगी। यह कीमत तो शरीर की बहुत कम नहीं है—ज्यादा ही होगी?'

युवक भिखारी स्तब्ध रह गया और जमीन पर बैठकर डाक्टर साहब को टकटकी लगाकर शान्त स्वभाव से देखता ही रहा और देखता ही रहा।

'जब तुम्हारे शरीर की कीमत 10 करोड़ है तो करोड़ों की कीमत वाले इस शरीर को अपना मानकर भीख माँग रहे हो। और अपना अमूल्य समय बरबाद कर रहो हो। जाओ कुछ करो। भीख, माँगना बन्द करो।'

नवयुवक भिखारी तुरन्त चला गया तथा बहुत सालों बाद एक सेमिनार में जब उस प्रसिद्ध डाक्टर की एक व्यक्ति से स्टेज पर अध्यक्षीय भाषण के दौरान भेंट हुई तो पता चला कि वह भेंटकर्ता और कोई नहीं पूर्ववर्णित भिखारी ही था, जो अब एक बहुत बड़ी दवा कम्पनी का कामयाब मालिक बन गया था। इस सेमिनार को भी व्यवस्थित ढंग से उसी ने आयोजित (Organize) किया था।

प्रसिद्ध डाक्टर ने जब उस दवा कम्पनी के मालिक से वार्तालाप की तब उस कम्पनी मालिक (पूर्व में भिखारी) ने इतना ही कहा कि मैं उस दिन से एक भी पल बिना गँवाए काम करता गया तथा आज कामयाबी की मंजिल पर पहुंचकर इस मुकाम तक पहुँच पाया हूँ।

भिखारी के समान अपनी कीमत समझने और कार्यों में तुरन्त लग जाने में ही आपकी भलाई है। दिन और रात के 24 घण्टे में आपने सिर्फ ऑफिस के लिए 6 या 7 घण्टे का काम किया। 7-8 घण्टे सोने में गुजारे, जो जीवन जीने के लिए आवश्यक है। फिर भला बाकी का हिसाब लगावें तो, औसतन व्यक्ति 7-8 घण्टे फालतू गँवा रहा है। अपनी स्वयं की कीमत नहीं जान रहा है और अपनी जिन्दगी की कीमत भुला रखी है, उपेक्षा कर रखी है, इसलिए जीवन में कुछ नहीं कर पा रहा है। जरा विचार करिये और स्वयं निर्णय लीजिए कि आपकी कीमत क्या है? हमें पता है कि क्षण-क्षण हमारा जीवन रुपयों की भाँति खर्च हो रहा है। एक दिन आखिरी Black warrant भगवान के घर से आ जाना है।

जो समय बचाते हैं, वे धन बचाते हैं और बचाया हुआ समय, कमाए हुए धन के बराबर होता है।

— महात्मा गाँधी

भगवान चार मृत्यु वारंट (Death Warrant) सावधान करने के लिए हर व्यक्ति को भेजता है।

भली प्रकार से ध्यान कर लें
Life does not have any replay

एक राहगीर कहीं जा रहा था। उसने देखा, एक काली छाया उसके साथ चल रही थी। राहगीर रुका, दोनों में आपस में बात हुई पर उन्होंने एक-दूसरे का परिचय नहीं पूछा। मुसाफिर जब अपने गंतव्य पर पहुंचा तो उसने देखा—छाया अभी भी उसके साथ आ रही है। उससे रहा नहीं गया तो पहले अपना परिचय दिया—'मैं एक सेठ हूं।' फिर उस छाया से पूछा कि 'तुम कौन हो?'

छाया ने कहा, 'मैं यमराज हूँ।' यमराज का नाम सुनते ही सेठ काँप उठा। हिम्मत बटोरकर उसने लड़खड़ाती आवाज में पूछा, 'आप कैसे आए हैं?' 'यमराज ने उत्तर दिया, 'आपको लेने।' अब सेठ को काटो तो खून नहीं। अपने को संभालकर उसने कहा, 'भले आदमी! आने से पहले मुझे सूचना तो दे दी होती।'

यमराज हँसा और बोला, 'मैंने तुम्हें चार सूचना पत्र भेजे, पर तुम तो अपने में ही मस्त थे।' सेठ ने विस्मय से कहा, 'पर महाराज मुझे तो आपका एक भी पत्र नहीं मिला।' यमराज ने इस बार जरा गंभीर होकर कहा, 'तुम्हारे बाल सफेद हुए—वह पहला पत्र (वारंट) था। तुमने बालों को काला रंग लिया। दूसरा पत्र (वारंट) था—तुम्हारे दाँत उखड़ गए। तुमने नकली दाँत लगवा लिए।

'तुम्हारी आंखों की ज्योति मंद पड़ गई—यह तीसरा पत्र (वारंट) था, लेकिन तुमने चश्मा लगवा लिया। तुम कम सुनने लगे—यह मेरा चौथा पत्र (वारंट) था किंतु तुमने सुनने का उपकरण लगवा लिया। यह सब इस बात की सूचना थी कि मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। तुम यह नहीं कह सकते कि मैंने तुम्हें सूचना नहीं भिजवाई। मेरी सूचना तुम्हें मिली जरूर किंतु तुमने भाषा समझने की कोशिश ही नहीं की।' यह सुनकर सेठ हक्का-बक्का रह गया।

It is no use to cry over spilt milk

अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।

हमारा समय अच्छा बीत रहा है या बुरा, हम कामयाबी की ऊँची उड़ान भर रहे हैं या धरती पर रेंगते चल रहे हैं——सारा-कुछ इस बात पर निर्भर है कि क्या हम समय से कुछ सीख कर चल रहे हैं। यदि हमने समय के साथ चलना नहीं सीखा तो समय हमें पीछे छोड़कर आगे निकल जावेगा तथा हम समय से ही नहीं, स्वयं से भी पिछड़ जायेंगे। हमारी जिन्दगी का सारा खेल——बस इसी समय की सुई पर घूमता है जो कभी उल्टी नहीं चल सकती।